Mind and Society ISSN 2277-6907
Vol.07, No. III & IV , Sep. & Dec. 2018 Page 64 to 68

# मन्नू भंडारी की कहानियों में पारिवारिक जीवन मूल्य

*डॉ. बृजबाला उइके

| Received | Reviewed | Accepted |
|---|---|---|
| 05 Sep. 2018 | 11 Sep. 2018 | 20 Sep. 2018 |

*जैन धर्म के अनुयायी होते हुए भी श्रीमती मन्नू भण्डारी का परिवार आर्य समाज की मान्यताओं से भी प्रभावित था अतः परिवार के सारे सदस्य खुल्ले ओर राष्ट्रीय विचारों से ओतप्रोत थे इसलिए उन्होंने अपनी पुत्रियों की शिक्षा दीक्षा में किसी प्रकार की कमी नहीं मन्नू की रचनाओ में कहीं छिछोरेन या हल्कापन नहीं है। मन्नू जी की कहानियां पंजाबी, गुजराती, मराठी, कन्नड़, तेलगू, मल्लयालम, अंग्रेजी आदि कई भाषाओं में अनुवादित हो चुकी है। श्रीमती भंडारी की कहानियॉ एक कमजोर लड़की की कहानी, अकेली, मजबूरी, सजा तथा तीसरा आदमी मे पारिवारिक जीवन संबंधित मूल्यों की प्राधनता है। यहॉ पर उक्त कहानियों मे विद्यमान मानवीय मूल्यों की खोज करने की कोशिश की गयी। अध्यनोपरांत पाया गया कि का विवेचना कर रहे है, जिनमें उन्होंने पारिवारिक जीवन के विभिन्न पक्षों का चित्रण किया हैं। एक कमजोर लड़की की कहानी की प्रमुख पात्र रूपा द्वारा कमजोर भावों एवं वियोग के होते हुए भी एक पत्नी की मर्यादाओं का पालन करते हुए अंततः अपने चरित्र का उज्जवल पक्ष प्रकट किया गया है तो अकेली और मजबूरी नामक कहानियों में लेखिका ने वृद्धावस्था के अकेलेपन के संमास को प्रस्तुत किया है। सजा कहानी में मन्नू भण्डारी ने एक टूटते हुए परिवार की व्यवस्था का चित्रण किया है, जबकि तीसरा आदमी कहानी में नायिका के विवाह के तीन वर्षो बाद भी संतान नहीं होने के बावजूद पत्नी सहनशील एवं संतुष्ट है जो अपने सुदृढ़ व्यक्तित्व को प्रस्तुत करती है।*

**एक कमजोर लड़की की कहानी [1]**

इस कहानी का कथानक ऐसी नारी के चरित्र का प्रतिनिधित्व करता है, जो बार–बार अपनी इच्छा के विरूद्ध कार्य करने के लिए विवश हो जाती है। रूपा में बचपन में स्कूल छुड़वा दिया जाता है। वह चाहकर भी पिता के इस निर्णय का विरोध नहीं कर पाती। उसे अपनी इच्छा के विरूद्ध पिता के निर्णय पर मामा के यहां रहने जाना पड़ता है। यहां भी वह कमजोर सिद्ध होती है। मामा के यहां रहते हुए उनके पाल्लित ललित से उसके संबंध घनिष्ठ हो जाते है। ललित के विदेश मे रहते हुए ही रूपा का विवाह उसके पिता की इच्छानुसार अन्यत्र तय हो जाता है। रूपा की दुर्बलता उसका भी विरोध नहीं कर पाती और मन मारकर विवाह करने के लिये वह बाध्य हो जाती है।

ललित विदेश से लौटकर कुछ दिनों के लिये रूपा के घर जाता है। वह उसे बताता है कि वह उसके बिना रह नहीं सकता। वह रूपा को अपने साथ भाग चलने की सलाह देता है।

**मजबूरी[2]**

यह कहानी एक वृद्धा नारी के मातृत्व मोह का चित्रण करती है। बूढ़ी अम्मा का बेटा रामेश्वर बंबई में नौकरी करता है। अम्मा अपने संत प्रवृत्ति के पति के संग एकांकी और नीरस जीवन बिता रही है। तीन वर्षो बाद रामेश्वर के

*सहायक प्राध्यापक, हिन्दी, शासकीय कमला देवी राठी महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय राजनांदगांव (छ.ग.)

घर लौटने की खबर ने अम्मा में नया उत्साह संचारित कर दिया। रामेश्वर की पत्नी रमा को दूसरा बच्चा होने वाला है, इसलिए वह अपने पहले बच्चे बेटू को अम्मा के पास छोड़ कर चली जाती है। अम्मा इस बात से इतनी उमंग में भर जाती है कि पड़ोस के सभी लोगों को दौड़–दौड़ कर यह खबर सुनाती है। बेटू के रूप में उसे जीवन कासे सरस बनाने का एक सबल साधन मिल जाता है।

अम्मा बेटू का लालन–पालन रामेश्वर की तरह की करती है, फलस्वरूप वह बिगड़ जाता है। रमा जब बेटू को इस बिगड़े हुए रूप में देखती है, तो उसे साथ ले जाना चाहती है, परन्तु दूसरे बच्चे में अति व्यस्त होने के कारण नहीं ले जा पाती। दो साल बाद जब रमा पुनः आती है तो निश्चय करती है कि बेटू का भविष्य बनाने के लिए उसे अपने साथ ले ही जाएगी। बूढ़ी अम्मा अत्यंक भावविहवल व रूऔंसी होकर मजबूरी से स्वीकृति दे देती है। बेटू के दूर होने का दुःख अम्मा को अधिक है, पर लोगों के सामने वह यही दर्शाती है कि उसे पाल सकना, उसके बूढ़े शरीर के लिए अब संभव नहीं था। बेदू के जाने के तीसरे दिन नही ही अम्मा को समाचार प्राप्त होता है कि वह रो–रोकर बीमार हो गया है। अम्मा उसे वापस ले आती है। अगले वर्ष रमा बेटू को लेकर सीधे बंबइ चली जाती है, जहां वह घुल–मिल जाता है। अम्मा बहू और बेटू के साथ अपने नौकर शिब्बू को खुद की जमा पूंजी खर्च कर जबर्दस्ती भेजती है क्योंकि उनके मन में यह आशा होती है कि बेटू इस बार भी उनके बिना नहीं रह पाएगा और शिब्बू उसे जरूर लौटा कर ले आएगा। लोगों के सामने वह यही कहती है कि इस बार यदि बेटू अपनी मां के साथ घुल मिल गया तो मेरी चिन्ता दूर हो जाएगी। इस बनावटी बात पर पर्दा डालने के लिए वह सवा रूपये की मनौती भी मानती है, लेकिन हृदय में वही अभिलाषा बनी रहती है कि बेटू इस बार भी घुल मिल न पाए और उसी के साथ रहे।

लौट कर शिब्बू यह बताता है कि बेटू नये वातावरएण का अभ्यस्त हो गया है तो अम्मा केवल शून्य पथराई आंखों से ताकती रह जाती हैं अपनी कमजोरी छिपाने के लिए वह शिब्बू को प्रसाद का सवा रूपया भी देती है और सबसे बनावटी उल्लास से बताती फिरती है कि अबकी बार बेटू मां से घुल मिल गया है लेकिन उसके दूर रहने से भीतर ही भीतर वह कितनी व्याकुल और द्रवित है, यह केवल वही जानती है।

यह कथनाक अत्यंक मार्मिक व बूढ़ी अम्मा के वात्सल्य को उभारने में पूरी तरह सक्षमहैं एक ओर अम्मा की ममता व दूसरी ओर उसकी विवशता को देखकर पाठक द्रवित हुए बिना नहीं रहता। उनका चारित्रिक द्वंद्व हृदय में कुछ और अपनी मजबूरी छिपाने के लिए लोगों के सामने कुछ और ककहना इस कथानक में प्राण फूंकता है। अम्मा का प्रत्येक कार्य कलाप कथानक को गतिशील बनाए रखने में सहायक हुआ है। प्रारंभ से अंत तक भावनाओं का जो प्रवाह चलता है, वह पाठक को निरंतर अभिभूत किए रहता है।

**''सजा'' न्याय व्यवस्था पर प्रहार करने वाली मार्मिक कहानी** [3]

इस कहानी की कथावस्तु के अनुसार ऑफिस के बीस हजार रूपये हड़पने के झूठे आरोप में आशा के पापा निलंबित कर दिये गए और अदालत ने उन्हें दो वर्ष की सजा सुनायी। आशा के मामा हाईकोर्ट से अपनी मंजूर करवा कर उन्हें छुड़ा लाए और मामला आगे उच्च न्यायालय में चलने लगा। आर्थिक विपन्नता` कारण पापा को छोटे से मकान में रहने की व्यवस्था करनी पड़ी। छोटे मुन्नू को बाबा व दादी के पास गांव भेज दिया गया। झूठे आरोप से लांछित होने के कारण पापा इस बुरी तरह टूट गए कि उनका सारा व्यक्तित्व ही गुम–सुम हो गया। आशा सब कुछ सहन करने के लिये तैयार है। वह केवल इतना चाहती है कि उसके पापा पहले की तरह हो जाए। ठंड खाकर अम्मा बीमार हो गई, उन्हें शायद राज्यक्ष्मा हो गया है, लेकिन आर्थिक तंगी के कारण वे डॉक्टर के पास जाने से हिचकती है। बूढ़े बाबा ने बेटे की मदद करने के ख्याल से 25 रूपये की नौकरी कर ली, लेकिन हिसाब किताब में कोई भूल हो जाने से वह भी छूअ गईं मुन्नू को चाचा जी के पास भेज दिया गया।

चाची के क्रोध स्वभाव से अम्मा एवं पापा परिचित है, किन्तु वे विवश हैं उसके सहारे के लिये आशा को भी वहीं भेज दिया गया। उसने अपनी पढ़ाई छोड़ दी। बस चाची को प्रसन्न रखने के लिए रात–दिन घर के काम करती रहती है, ताकि मुन्नू उनके गुस्से से बचा रहे। फिर भी बेचारा उपेक्षित सा, दिन भर घर के काम करता रहता है। बीमारी के कारण मामा अम्मा को अपने साथ ले गये और पापा पुराने मकान छोड़कर अंधेरी सीलन भरी कोठरी में, गंदे मोहल्ले में रहने चले गये। पापा कभी आशा को पत्र नहीं लिखते। अम्मा दो चार पंक्तियां अपनी खैरियत की लिख भेजती है। आशा जानती है कि यह झूठ है, कोई खैरियत से नहीं है। वह खुद भी नहीं। कोर्ट से सुनवाई की तारीखें जल्द ही मिल पाती और सुनवाई–सुनवाई में पांच वर्ष बीत जाते है। इन

पांच वर्षो में पूरा परिवार इस कदर टूट जाता है कि इसी विपन्न स्थिति को अपनी नियति मान बैठता है।

पांच सालों बाद पापा बरी हो गये। आशा और मुन्नू खुशी से नाच कर पापा से लिपट गए। लेकिन पापा उसी तरह निष्प्रभ है, केवल पथराई आंखों से ताक रहे हैं। उन्हें विश्वास ही नहीं हो रहा कि उन्हें सजा नहीं हुई। सच तो है, इन पांच वर्षों में जो टूटन, घुटन, संकट, विपन्नता और परेशानियां पूरे परिवार ने सही है, कया वे किसी सजा से कम थी?

इस कहानी का कथानक अदालतों की कछुवा गति से चलने वाली कार्य प्रणाली पर प्रहार करता है। संपूर्ण विकृत न्याय व्यवस्था के समक्ष यह एक प्रश्न चिन्ह उपस्थित करता है। बिना कोई अपराध किये ही कानूनी सजा से भी भयंकर सारे परिवार को भुगतनी पड़े, यह हमारी न्याय व्यवस्था की विडम्बना ही है। समाज में व्याप्त अस दोष की ओर लेखिका का लक्ष्य, प्रशंसनीय है। सैद्वांतिक रूप से कहानी, कथानक की कसौटी पर पूर्ण रूपेण सफल है। प्रारंभ कुतूहलपूर्ण और अंत प्रभावात्मक है। कहानी इसलिए भी प्रभावपूर्ण व मार्मिक बन पड़ी है। क्योंकि सारी कथा किशोरी आशा के आत्म कथनात्मक रूप में प्रस्तुत की गई है। कहानी कहरने का यह ढंग कहानी को अत्यंत मार्मिक बनाता है।

**''बद दराजों का साथ'' खंडित परिवार की कहानी** [4]

''बंद दराजों का साथ'' कहानी का कथानक सीधा और सरल है, विपिन और मंजरी सुखी दांपत्य जीवन यापन कर रहे हैं। एक दिन मंजरी विपिन को कुछ ऐसे कागजों में उलझा देखती है, जो उसके मान में संशयारोपण कर देते हैं। विपिन की मेज की तीन दराजों में से एक उसकी व्यक्तिगत होती है, विपिन का उसे सिवाय और भी कुछ व्यक्तिगत है, यह जानकार मंजरी अव्यवस्थित हो उठती है। फलस्वरूप उसके और विपिन के बीच लगातार दुराव उत्पन्न होता जाता है। इसी बीच मंजरी एक बच्चे की मां बन जाती है। वह सोचती है कि शायद बच्चा उन दोनों में सेतु बन जाए, परंतु वैसा कुछ नहीं होता। आखिर मंजरी विपिन से तलाक ले लेती है।

तीन वर्ष तक एकाकी जीवन यापन करने के बाद, नीरसता से उबकर वह अपने एक परिचित दिलीप से विवाह कर लेती है और बच्चे असित को होस्टल भेज देती हैं एक दिन असित के होस्टल व्यय पर दिलीप द्वारा स्वाभाविक सी बात कहने पर ही, मंजरी पुनः अव्यवस्थित हो उठती है कि दिलीप से भी दुराव अनुभव करने लगती है। पहली बार विपिन की व्यक्तिगत बातों से वह उससे दूर होती गई थी, अब असित और मंजरी का बीता हुआ जीवन उसका वैयक्तिक है, जो उसे दिलीप से भी दूर करता जाता है।

कहानी का कथ्य केवल इतना है कि, सीक्रेट पॉकेटस रखकर जीने वाला व्यक्ति किस प्रकार अपने साथी को भी टुकड़ो में बांटता चलता है, दूसरा विवाह करके भी टुकड़ो में बंटकर जीना मंजरी की नियति हो जाती है।

**तीसरा आदमी** [5]

सतीश बार–बार चाहता है कि वह डॉक्टर से अपनी जांच करा आए और शकुन को बता दे कि वह पूर्ण पुरूष है, परन्तु जिस अज्ञात भय ने उसके मन में घर कर लिया है, वहीं उसे डॉक्टर के पास जाने से हर बार रोकता रहता है। हर बार वह सोचता है कि, वह शकुन की इस झूठी और बेतुकी जिद के सामने अपने को यो अपमानित नहीं होने देगा, पर हर बार, कहीं बहुत भीतर से एक प्रश्न का उठता क्या वह सचमुच शकुन की जिद के कारण ही जिद किए बैठा है और कहीं कुछ नहीं है? किसी आशंका ने तो उसे रोक नहीं रखा है और यही आशंका धीरे–धीरे उसके मन में गांठ बनाती चल रही थी। उसका खुद अपने पर से जैसे विश्वास उठने लगा था, उसे स्वयं शकुन का संदेह कभी–कभी सच लगने लगता था। एक अपराध भावना उसके मन में घर करने लगी थी।

शकुन की मदद के ख्याल से मां को घर बुलाने पर, एक ही कमरा होने के कारण जो शकुन रो–रोकर मिन्नते करती हुई उससे कहती थी कि तुम मुझ से चौगुना काम करवा लो, पर रात को तुम्हारी बांहे छोड़ कर नही सो सकती। वहां आते ही थकान मिट जाती है, अगले दिन के लिए ताजगी आ जाती है, वहीं शकुन अब सतीश के उसे बांहों में लेने के प्रयत्न पर ''मुझे नींद आ रही है'', कहकर करवट बदल लेती है और सतीश अपमानित आहत होकर रह जाता है।

टपने पौरूषहीन होने का अंशय सतीश के मन में इतना घर कर जाता है कि अब शायद वह शकुन को कभी बच्चा नहीं दे पाएगा। इसी से उसके मन में यहां तक विचार आता है कि क्या वह शकुन को खुश रखने के लिए, उसे किसी और के बच्चे की मां बनाने में सहायक नहीं हो सकता? यह सतीश की हीन ग्रंथी को चरमोत्कर्ष है।

एक प्रसिद्ध लेखक आलोक, शकुन के नवरिचित मित्र है और उसके बुलावे पर वे उसके घर आते हैं। उनके स्वगत के लिए शकुन को सोत्साह जुटा हुआ देख सतीश के मन में तरह–तरह के विचार आते हैं कि कहीं आलोक

और शकुन के बीच अनैतिक संबंध तो नहीं? हर बार वह सारी बात को स्वाभावित रूप से लेना चाहता है, परन्तु मस्तिष्क की हीन भावना उसे बार–बार वहीं सोचने पर विवश कर देती है। उसे लगता है कि आलोक को आकर्षित करने के लिए ही शकुन अपने अंगो–प्रत्यंगो को पूरी तरह से उभार कर सजी–संवरी बैठी है। वह आफिस से आधे दिन से ही छुट्टी लेकर घर लौट आता है, लेकिन भीतर से खिड़की दरवाजे बंद देख कर बुरी तरह विचलित हो उठता है। उसके मन में आता है कि दरवाजा तोड़कर दोनों को रंगे हाथों पकड़ ले, लेकिन दरवाजा खटखटाने का साहस भी नहीं कर पाता। उसे लगता है कि उसके घर आने से ही शकुन उसे तिरस्कृत नजरों से देखेगी और वह दोनों के नजरों में तो गिरेगा ही, खुद अपनी भी नजरों में गिरेगा। वह खिड़की से भी झांकने का प्रयत्न करता है लेकिन झांक नहीं पाता। उसे खुद पर ही क्षोभ होने लगता है कि क्यों नहीं उसने पहले ही खिड़की में छेद करके रख दिया।

लौट क रवह आवारा सा सारे गांव में भटकता रहता है। अपने सारे क्रिया कलाप और सोचने समझने के ढंग पर गौर करता है। उसे लगता है कि वह सचमुच ही पौरूषहीन है। कोई मर्द बच्चा होता, तो दो लात मारता दरवाजे को और झोंटा पकड़ कर बाहर कर देता शकुन को और दो झापड़ मारता उस लफंगे के। उसके सादे अस्तित्व को मथता हुआ आज यह विश्वास पूरी तरह उसके मन में जम गया कि वह पुरूष नहीं है.....और उसे लगा, यह बात तो वह बहुत पहले ही जान गया था, तभी तो उसकी कभी हिम्मत नहीं हुई कि जाकर डॉक्टर को दिखा आए। आज के व्यवहार ने तो पूरी तरह सिद्ध कर दिया। थू: उसने सामने की पानी में थूक दिया। कोई असली मर्द का बच्चा होता तो.....उसे अपने आप से नफरत होने लगी। ठीक ही तो किया शकुन ने। कौन औरत ऐसे नामर्द की पत्नी होकर रहना पसंद करेगी?

वह देर से घर वापस आता है। चोकन्नी आंखे शकुन के शरीर पर कोई लाल–नीला दाग ढूंढने लगती है। वह पलंग को बार–बार देखता है। सोचता है, क्या–क्या हुआ होगा। वह निश्चय करता है कि उनके साफ–साफ कह देगा कि, मुझे मालूम है तुमने मेरी अनुपस्थिति में क्या–क्या किया। लेकिन वह नहीं पाता। भीतर की गर्मी उतारने के लिए वह सर्दी में भी ठंडे पानी से नहाता है। उसकी हीन ग्रंथि उसे इतना उत्तेजित कर देती है कि बाथरूम में वह अपने अंगों से अश्लील हरकते करने लगता है। अंगों से गंदा खिलवाड़ करने पर वह महसूस करता है कि उसका आत्मविश्वास लौट आया है, वह पूर्ण पुरूष है।

हीन भावना से संत्रस्त सतीश के मन में जितने भी संशय उत्पन्न होते है, उनके साथ–साथ वह दूसरे पहलू पर भी गौर करता जाता है कि शायद वह जो कुछ सोच रहा है, वह गलत हो और वस्तुस्थिति कुछ और ही हो। उसका यह अंतर्द्वद, विचारों की उथल–पुथल क्षण–प्रतिक्षण उसके मनोविश्लेषण को गति देते जाते हैं। सतीश के हीनताग्रस्त व्यक्तित्व का रोचक प्रभावपूर्ण और स्वाभाविक चित्रण करने में मन्नू जी की सशक्ता का परिचय मिलता है।

**अकेली** [6]

कहानी में सोमा बुआ का संपूर्ण चरित्र इतना मार्मिक बन पड़ा है कि पाठक द्रवित हुए बिना नहीं रह पाता। जवान पुत्र की मृत्यु के सदमे से सोमा बुआ का पति सन्यासी हो गया और वह पिछले बीस वर्षो से एकाकी जीवन यापन कर रही है। पहाड़ सी लम्बी और भारी जिन्दगी बिताने के लिए, उसका अपना कोई नहीं, इसलिए सारा आस–पड़ोस ही उसका अपना है। वह औरों के सुख दुख में दौड़–दौड़ कर हाथ बटाती है। उसे किसी के न बुलाने का कोई रंज नहीं। वह बिना बुलावे के भी औरों की गमी खुशीा में जाकर दौड़–दौड़ कर काम करती है। उसके लिए उसका अपना तर्क भी है, मेरा अपना हरखु होता तो क्या मैं उसके बुलाने के भरोसे बैठी रहती? मेरे लिए जैसा हरखू, वैसा किशोरीलाल। आज हरखू नहीं है, इसी से दूसरे को देख–देख कर मन भरमाती रहती हूं।

इसी तरह सोमा बुआ अपने अकेलेपन को काट रही है। लेकिन यह सब उसेक सन्यासी पति को जरा भी अच्छा नहीं लगता, जो प्रतिवर्ष एक माह के लिए घर आता है। वह उसका अकेलेपन तो कम नही करता, लेकिन बुआ का अपनी तरह से अकेलापन काटना भी उसे सुहाता नहीं। लेखिका के शब्दों में, जब तक पति रहते उसका मन और भी मुरझाया रहता, क्योंकि पति के स्नेह हीन व्यवहार का अंकुश उसके रोजमर्रा के जीवन की अबाध गति से बहती स्वच्छंद धारा को कुंठित कर देता। उस समय उका घूमना–फिरना, मिलना–जुलना बन्द हो जाता और सन्यासी जी महाराज से यह भी नहीं होता कि दो मीठे बोल बोल कर सोमा बुआ को एक ऐसा संबल ही पकड़ा दे जिसका आसरा लेकर वह उनके वियोग के ग्यारह महीने काट दें।

बुआ के स्वर्गवासी देवर के ससुराल वालों की किसी लड़की का संबंध पड़ोस में भगीरथ जी के नहीं हो रहा है। सोमा बुआ इस बात से अति प्रसन्न है। बुआ को जब पता

चला कि बुलावे की सूची में उनका भी नाम है, तो वे खुशी से फूली न समाई। सोमा बुआ के मन में अब एक ही धुन सवार है कि शादी में क्या भेट दी जाए? भेंट की वस्तु खरीदने के लिए उन्होंने अपनी सारी पूंजी निकाल ली, लेकिन वह इतनी न थी कि बड़े घरवालों को उससे कोई शोभनीय भेंट दी जा सके। अपने स्नेह और ... की साख रखने के लिये विवश होकर उन्होंने अपने मृत पुत्र की एकमात्र निशानी अंगूठी भी बेच डाली। विवाह के एक दिन पहले और विवाह के कार्यक्रम की याद कर–कर के बुआ ठीक से सो भी न सकी।

विवाह वाले दिन तो वह बड़े सबेरे से ही घर के काम–काम में जुट गई। सन्यासी जी कई बार चेतावनी दे चुके कि, बिना बुलावे क॓मत चली जाना, और बुआ को पूरा विश्वास है कि बुलाया जरूर आएगा। बुआ के अति उल्लास से, सकुचाते हुए नई चूड़ियां पहन ली है, सफेद साड़ी को रंगकर रंगीन बना लिया, उसमें मांड का कलफ लगा लिया और शादी में भेंट ले जाने वाली वस्तुओं का थाल सजाकर दिन भर बुलावे की राह देखती रही। पांच बजे का मुहूर्त का समय भी निकल गया और बुआ सात बजे तक आशा भरी नजरों से बुलावे की राह ही दिखती रही। बुलावा नहीं आया, बुआ का सारा उल्लास क्षीण हो गया और वह बड़े मुझे दिल से घर के काम में लग गई।

**निष्कर्ष**

एक कमजोर लड़की की कहानी में रूपा कमजोर भावों एवं वियोग के होते हुए भी वह एक पत्नि की मर्यादाओं का पालन करते हुए अंततः अपने चरित्र का उज्जवल पक्ष प्रकट करती हुई दाम्पत्य जीवन को एक मूल्य प्रदान करती है। अकेली और मजबूरी नामक कहानियों में लेखिका ने वृद्धावस्था के अकेलेपन के संमास को प्रस्तुत किया है। अकेली कहानी की नायिका सोमा बुंआ एक शादी में सम्मिलित होना चाहती है, उपहार में देने के लिए अपने घर के मूल्यवान वस्तुओं को बेचकर भी उसकी व्यवस्था करती है, पर निमंत्रण नहीं मिलने के कारण उसमें सम्मिलित नही हो पाती और प्रतीक्षा करते–करते उनको जीवन की असीमित व्यथा प्रकट हो जाती है। सजा कहानी में मन्नू भण्डारी ने एक टूटते हुए परिवार की व्यवस्था का चित्रण किया है, साथ ही वर्तमान न्याय व्यवस्था पर भी उन्होंने प्रश्न चिन्ह अंकित किये है, बंद दराजों का साथ में विपिन और मंजरी सुरती जीवन व्यतीत करते है, पर जरा से संदेह पर मंजरी दूसरा विवाह कर लेती है सफल दमपत्य जीवन में संदेह की स्थिति निर्मित होती है पर उनके निराकरण का हल तलाक और दूसरा विवाह नहीं है जिसे पारिवारिक जीवन मूल्यों का बिखराव कहा जायेगा। तीसरा आदमी कहानी में नायिका के विवाह के तीन वर्षो बाद भी संतान नहीं होती उसे इस बात का दुख नही है पर उसके पति के हीनता की ग्रंथियों का ही आदि के अंत तक चित्रण किया गया है और स्वयं पत्नि के चरित्र पर संदेह व्यक्त करता है किन्तु पत्नी सहनशील एवं संतुष्ट है जो अपने सुदृढ़ व्यक्तित्व को प्रस्तुत करती है यह भारतीय पारिवारिक मूल्यों की दृष्टि से उसका व्यक्तित्व पूर्णतः संयमित और परिपूर्ण है। इस प्रकार उपरोक्त सभी कहानियों में पारिवारिक जीवन मूल्यों का विश्लेषणात्मक चित्रण किया गया है।

**संदर्भ**

1. मन्नू भण्डारी, ***प्रतिनिधि कहानियां***, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, पहला संस्करणः 1994 पहली आवर्त्तिः 2001 पृष्ठ 42।
2. वही, पृष्ठ क्रमांक 18,
3. वहीं, पृष्ठ क्रमांक 103,
4. वहीं, पृष्ठ क्रमांक 47,
5. वहीं, पृष्ठ क्रमांक 48,
6. वहीं, पृष्ठ क्रमांक 48,